"गुरु विमुखता"

- सतिगुर ते जो मुंह फेरे ते वेमुख बुरे दिसनि । अनदिन बधे मारीअनि फिरि वेला न लहंनि ।

अर्थ:- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु से मुंह फेरे रखते हैं, गुरु की ओर से बेमुख हुए वो मनुष्य देखने को ही भले बुरे दिखते हैं । माया के मोह के बंधनों में बंधे हुए वह मनुष्य हर समय मोह की चोटें खाते रहते हैं, इन चोटों से बचने के लिए उन्हें दुबारा समय हाथ नहीं लगेगा अर्थात मार भी खाते रहते हैं, फिर भी ये मोह इतना प्यारा लगता है कि इसमें से निकलने को जीअ नहीं करता ।

हरि हरि राखहु क्रिपा धारि । सतसंगति मेलाई प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ।

अर्थः- हे हरि ! हे हरि ! मेहर कर मुझे माया के पँजे से बचा के रख । हे हरि ! हे प्रभु ! मुझे साध - संगत में मिला के रख, ता कि मैं तेरे गुण अपने हृदय में संभाल के रखूँ ।

से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाई चलनि । आप छोडि सेवा करनि जीवत मुए रंहनि ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा को वह भक्त प्यारे लगते हैं, जो गुरु की शरण पड़ कर गुरु के दर्शाए मुताबिक जीवन व्यतीत करते हैं, जो गुरु के हुक्म अनुसार स्वभाव स्वार्थ छोड़ के सेवा भक्ति करते हैं और दुनिया के कार्य - व्यवहार करते हुए भी माया के मोह की ओर से अछोह रहते हैं ।

जिस दा पिंड पराण है तिस की सिरि कार । ओह किउ मनहु विसारिऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ।

अर्थः- हे भाई ! जिस परमात्मा का दिया हुआ ये शरीर है, जिस परमात्मा की दी हुई ये जिंद है, उसी का हुक्म ही हरेक के शरीर पर चल रहा है । उसे किसी भी हालत में अपने मन से भुलाना नहीं चाहिए । उस परमात्मा को अपने हृदय में बसा के रखना चाहिए ।

नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मनिऐ सुख होई । सतिगुर ते नाम पाईऐ करमि मिलै प्रभ सोई ।

अर्थः- हे भाई ! अगर परमात्मा का नाम मिल जाए तो हर जगह इज्जत मिलती है अगर परमात्मा के नाम से मन लग जाए तो आत्मिक आनंद हासिल होता है, पर हे भाई ! गुरु से ही परमात्मा का नाम मिलता है, अपनी मेहर से ही वह परमात्मा मिलता है ।

सतिगुर ते जो मुंह फेरे ओई भ्रमदे ना टिंकनि । धरति असमान न झलई विचि विसटा पए पंचनि ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु की ओर से मुंह मोड़े रखते हैं वो मनुष्य माया के मोह में सदैव भटकते फिरते हैं, उन्हें कभी आत्मिक शाति नहीं मिलती । उन्हें ना धरती ना ही आसमान झेल सकता है सारी सृष्टि में कोई अन्य जीव उन्हें आत्मिक सहारा नहीं दे सकता वे माया के मोह की गंदगी में पड़े हुए ही आत्मिक जीवन जलाते रहते हैं ।

इहु जग भरमि भुलाइआ मोह ठगउली पाई । जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माई ।

अर्थः- हे भाई ! माया ने इस जगत को अपने मोह की भटकना में डाल के मोह की ठग बूटी खिला के गलत जीवन राह पर डाला हुआ है । पर हे भाई ! जिन्हें सतिगुरु मिल जाता है, ये माया उनके नजदीक भी नहीं फटकती उन पर अपने मोह का जादू नहीं चला सकती ।

सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैल गवाई । सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाई ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य सतिगुरु की शरण पड़ते हैं वह अपने अंदर से अहंकार की मैल दूर करके स्वच्छ जीवन वाले बन जाते हैं । जो मनुष्य गुरु के शब्द के रंग में रंगे जाते हैं, वे पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं, वे गुरु के बताए हुक्म के अनुसार चलते हैं जीवन बिताते हैं ।

हरि प्रभ दाता एक तूं तूं आपे बखसि मिलाई । जन नानक सरणागती जिउ भावै तिवै छडाई । (3-233-234)

अर्थः- हे हरि ! हे प्रभु ! सिर्फ तू ही है जो गुरु के द्वारा अपने नाम की दात देने वाला है, तू स्वयं ही मेहर करके मुझे अपने चरणों में जोड़ । मैं तेरा दास नानक तेरी शरण आया हूँ, जैसे तुझे ठीक लगे, मुझे उसी तरह इस माया के मोह के पँजे से बचा ले ।

• होदै परतखि गुरू जो विछड़े तिन कउ दरि ढोई नाही । कोई जाई मिलै तिन निंदका मुंह फिके थुक थुक मुहि पाही । जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही ।

अर्थः- सतिगुरु के प्रत्यक्ष होते हुए भी जो निंदक गुरु से विछुड़े रहते हैं उन्हें दरगाह में आसरा नहीं मिलता । यदि कोई उनका संग भी करता है उसका भी मुँह फीका और मुँह पर निरी थूक पड़ती है भाव, लोग मुँह पर धिक्कारते हैं क्योंकि जो मनुष्य गुरु से विछुड़े हुए हैं वह संसार में भी तिरस्कारे हुए हैं और सदा भंभलभूसे में डाँवा - डोल रहते हैं ।

जिन गुर गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही । तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही । ओना दा आखिआ को ना सुणै नित हउले हउलि मराही ।

अर्थः- जो मनुष्य प्यारे सतिगुर की निंदा करते हैं, वह सदा जैसे ढाहें मारते फिरते हैं । उनकी तृष्णा कभी नहीं उतरती और सदा भूख -भूख करते कूकते हैं, कोई उनकी बात का एतबार नहीं करता इस कारण वह सदा चिन्ता फिक्र में ही खपते हैं ।

सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओन्हा अगे पिछै थाउ नाही । जो सतिगुर मारे तिन जाई मिलहि रहदी खुहदी सभ

पति गवाही । ओई अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओस मिलै तिस कुसट उठाही ।

अर्थः- जो मनुष्य सतिगुर की महिमा बर्दाश्त नहीं कर सकते, उन को लोक - परलोक में ठिकाना नहीं मिलता । गुरु से जो विछुड़े हैं, उनसे मनुष्य जा मिलते हैं, वे भी अपनी छोटी - मोटी इज्जत गवा लेते हैं क्योंकि गुरु से टूटे हुए वे पहले ही कोढ़ी हैं, जो कोई ऐसे मनुष्य का संग करता है उसे भी कोढ़ चिपका देते हैं ।

हरि तिन का दरसन ना करहु जो दूजै भाई चित लाही ।
धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिस नालि किहु चारा नाही ।

अर्थः- हे सिखो ! वास्ता है ईश्वर का उनके दर्शन भी ना करो जो सतिगुर को छोड़ के माया के प्यार में चित्त जोड़ते हैं, उनके साथ भाव, उन्हें सुधारने के लिए कोई उपाय कारगर नहीं हो सकता क्योंकि, करतार ने आरम्भ से ही उनके किए कर्मों के अनुसार ऐसे दूसरे भाव के संस्कार ही उनके मन में लिख के डाल दिए हैं ।

जन नानक नाम अराधि तूं तिस आपड़ि को न सकाही ।
नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ।
(4-308-309)

अर्थः- हे दास नानक ! तू नाम जप, नाम जपने वाले की बराबरी कोई नहीं कर सकता, नाम की महिमा बहुत बड़ी है, दिनो - दिन बढ़ती जाती है ।

• सतिगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले । अनदिन दुख कमावदे नित जोहे जम जाले । सुपनै सुख न देखनी बहु

चिंता परजाले । (3-30)

अर्थः- जो मनुष्य गुरु से बेमुख होते हैं उनके माथे भ्रष्ट हो जाते हैं । उन्हें अपने अंदर से फिटकार ही पड़ती रहती है । वह सदा वही करतूतें करते हैं जिनका फल दुख होता है । वह सदा जम के जाल में जम की ताक में रहते हैं । कभी सपने में भी उन्हें सुख नहीं मिलता । बहुत सारी चिंताएं उन्हें जलाती रहती हैं ।

- जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिस ठउर न ठाउ । हलत पलत दोवै गए दरगह नाही थाउ ।

अर्थः- जिस मनुष्य ने अपने सतिगुरु की निंदा की है, उसे ना जगह ना ठिकाना । उसके ये लोक और परलोक दानों गवाए जाते हैं, हरि की दरगाह में भी जगह नहीं मिलती है ।

ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाई । सतिगुर की गणतै घुसीऐ दुखे दुख विहाई ।

अर्थः- ऐसे लोगों को फिर वह मौका नहीं मिलता कि सतिगुरु के चरणों में लग सकें, क्योंकि सतिगुरु की निंदा करने में एक बार जो गलतान हो जाएं तो बिलकुल दुखों में ही उम्र बीतती है ।

सतिगुर पुरख निरवैर है आपे लए जिस लाई । नानक दरसन जिना वेखालिओन तिना दरगह लए छडाई ।

अर्थः- पर मर्द भाव, शूरवीर सतिगुर ऐसा निरवैर है कि उस निंदक को भी खुद ही भाव, अपने आप मेहर करके चरणों से लगा लेता है और हे नानक ! जिन्हें हरि गुरु के दर्शन करवाता है उन्हें दरगाह में छुड़ा लेता है ।

मनमुख अगिआन दुरमति अहंकारी । अंतर क्रोध जूऐ मत हारी ।

अर्थः- मनमुख विचार हीन, खोटी बुद्धि वाला और अहंकारी होता है, उसके मन में क्रोध है और वह विषयों के जूए में अक्ल गवा लेता हैं ।

कूड़ कुसत ओह पाप कमावै । किआ ओह सुणै किआ आखि सुणावै ।

अर्थः- वह सदा झूठ - फरेब और पाप के काम करता है इस वास्ते वह सुने क्या और किसी को कह के सुनाए क्या ? भाव, झूठ फरेब वाले काम करने से उसका मन तो पापी हुआ ही पड़ा है, ना वह प्रभु की बंदगी की बात सुनता है और ना ही किसी को सुनाता है ।

अंना बोला खुइ उजड़ पाई । मनमुख अंधा आवै जाई ।

अर्थः- सतिगुर के दर्शनों से अंधा और उपदेश सुनने से बहरा हो के अंधा मनमुख गलत रास्ते पर पड़ा हुआ है और नित्य पैदा होता मरता है ।

बिन सतिगुर भेटे थाइ न पाई । नानक पूरब लिखिआ कमाई ।

अर्थः- सतिगुर को मिले बिना कोई दरगाह में स्वीकार नहीं होता, क्योंकि हे नानक ! शुरू से किए कर्मों के अनुसार जो संस्कार उसके मन में लिखे गए हैं उनके अनुसार अब भी बुरे काम ही किए जाता है ।

जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ।
ओथै सच वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ।

अर्थ:- जिन मनुष्यों के मन कठोर भाव निर्दयी होते हैं वे सतिगुर के पास नहीं बैठ सकते । वहाँ सतिगुर की संगत में तो सत्य की बातें होती हैं, झूठ के व्यापारी के मन को उदासी छाई रहती है ।

ओई वल छल करि झति कढदे फिरि जाई बहहि कूड़िआरा पासि । विचि सचे कूड़ न गडई मनि वेखहु को निरजासि । कूड़िआर कूड़िआरी जाई रले सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि । (3-314)

अर्थ:- सतिगुर की संगति में वे छल - फरेब करके समय गुजारते हैं, वहाँ से उठ के फिर झूठों के पास ही जा बैठते हैं । कोई पक्ष मन में निर्णय कर के देख लो सच्चे मनुष्य के हृदय में झूठ नहीं मिल सकता अर्थात अपना गहरा प्रभाव नहीं डाल सकता । झूठे झूठों में ही जा मिलते हैं और सच्चे सिख सतिगुर के पास ही जा बैठते हैं ।

- जिनि पुरखी सतगुर न सेविओ से दुखीए जुग चारि । घरि होदा पुरख न पछाणिआ अभिमान मुठे अहंकार ।

अर्थ:- जिन लोगों ने गुरु की बताई हुई सेवा नहीं की, वह चारों युगों में दुखी रहते हैं । अर्थात, युग चाहे कोई भी हो गुरु की शरण के बिना दुख है । वो मनुष्य हृदय घर में बसते परमात्मा को नहीं पहचान सकते वह अहंकार में अभिमान में फंसे रहके आत्मिक जीवन की राशि पूंजी लुटा बैठते हैं ।

सतगुरू किआ फिटकिआ मगि थके संसार । सचा सबद न सेविओ सभि काज सवारणहार ।

अर्थ:- गुरु द्वारा बेमुख मनुष्य जगत में मांगते फिरते है । माया खातिर भटकते फिरते हैं । वह बंदे उस अटल गुर शब्द को नहीं स्मरण करते जो सारे कार्य सवारने में समर्थ है ।

मन मेरे सदा हरि वेख हदूर । जनम मरन दुख परहरै सबदि रहिआ भरपूर ।

अर्थ:- हे मेरे मन ! परमात्मा को सदा अपने अंग संग देख । परमात्मा जीवों का जन्म - मरन का दूख दूर कर देता है । वह गुरु के शब्द में भरपूर बस रहा है इस वास्ते, हे मन ! गुरु का शब्द अपने अंदर धारण कर ।

सच सलाहनि से सचे सचा नाम अधार । सची कार कमावणी सचे नालि पिआर ।

अर्थ:- जो मनुष्य सदा स्थिर प्रभु की महिमा करते हैं वह उस सदा स्थिर का ही रूप हो जाते हैं । परमात्मा का सदा स्थिर नाम उनकी जिंदगी का आसरा बन जाता है । जिन्होंने नाम जपने की ये सदा स्थिर रहने वाली कार की है, उनका प्यार सदा स्थिर प्रभु से बन जाता है ।

सचा साह वरतदा कोइ न मेटणहार । मनमुख महल न पाइनी कूड़ मुठे कूड़िआर ।

अर्थ:- परमात्मा ही सदा स्थिर रहने वाला शाह है, जिसका हुक्म जगत में चल रहा है । कोई भी जीव उसके हुक्म की उलंघना नहीं कर सकता । अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य परमात्मा का दर घर नहीं ढूंढ सकता । नाशवान जगत के व्यापारी झूठे मोह में ही आत्मिक जीवन की राशि पूंजी ठगा बैठते हैं ।

हउमै करता जग मुआ गुर बिन घोर अंधार । माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातार ।

अर्थः- जगत मैं - मैं करता ही भाव, मैं बड़ा हूं, मैं बड़ा हूं इस अहंकार में जीव आत्मिक मौत ले लेता है । गुरु की शरण से वचित रह कर उसके जीवन में घोर अंधकार बना रहता है । माया के मोह में फंस के इस ने सुखदायक और सभ दातें देने वाले परमात्मा को विसार दिया है ।

सतगुर सेवहि ता उबरहि सच रखहि उर धारि । किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ।

अर्थः- जब जीव गुरु की बताई हुई सेवा करते हैं, तब माया के मोह के घोर अंधेरे में बच जाते हैं तथा सदा स्थिर प्रभु को अपने दिल में बसा के रखते हैं । प्रभु अपनी मेहर से ही मिलता है । स्मरण से ही सदा स्थिर गुरु - शब्द के द्वारा उस के गुणों की विचार की जा सकती है ।

सतगुर सेवि मन निरमला हउमै तजि विकार । आप छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ।

अर्थः- गुरु द्वारा बताई सेवा करके अहम् से पैदा होने वाले विकार छोड़ के मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है । गुरु के शब्द द्वारा प्रभु के गुणों के विचार हृदय में टिका के और स्वै - भाव दूर करके ।

धंधा धावत रहि गऐ लागा साचि पिआर । सचि रते मुख उजले तित साचै दरबार ।

अर्थः- मनुष्य दुनिया के कार्य - व्यवहार करता हुआ विकारों से बचा रहता है । जिन मनुष्यों का सदा स्थिर प्रभु के चरणों में प्यार बन

जाता है, वह मोह के झमेलों की भटकनों से बच जाते हैं । सदा स्थिर प्रभु के रंग में रंगे हुए लोग सदा स्थिर प्रभु के दरबार में आजाद हो जाते हैं ।

सतगुर पुरख न मनिओ सबदि न लगो पिआर । इसनान दान जेता करहि दूजै भाइ खुआर ।

अर्थः- जिन लोगों ने सतगुरू को अपने जीवन का रहिबर नहीं माना जिस का गुरु - शब्द में प्यार नहीं बना, वे जितना भी तीर्थ स्नान करते हैं, जितना भी दान - पुण्य करते हैं, माया के प्यार के कारण वह सारा उन्हें खुआर ही करता है ।

हरि जीउ आपणी किरपा करे ता लागै नाम पिआर । नानक नाम समालि तू गुर कै हेति अपार । (5-34)

अर्थः- जब परमात्मा खुद अपनी मेहर करे, तब ही जीव का उसके नाम से प्यार बनता है । हे नानक ! गुरु के अटुट प्रेम की इनायत से तू परमात्मा का नाम अपने हृदय में सम्भाल के रख ।

• सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि । फिरि फिरि मिलण न पाइनी जमहि तै मरि जाहि ।

अर्थः- जो मनुष्य सतिगुर की ओर से मनमुख हैं वह अंत में बँधे दुख सहते हैं प्रभु को मिल नहीं सकते बार - बार पैदा होते मरते रहते हैं ।

सहसा रोग न छोडई दुख ही महि दुख पाहि । नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि।

अर्थः- उन्हें चिन्ता का रोग कभी नहीं छोड़ता, सदा दुखी ही रहते है । हे नानक ! कृपा - दृष्टि वाला प्रभु अगर उन्हें बख्श ले तो सतिगुर के शब्द के द्वारा उस में मिल जाते हैं ।

जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर ना ठाउ । जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारिण बदनाउ । नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेल मिलाउ ।

अर्थः- जो मनुष्य सतिगुर से मनमुख हैं उनका ना ठौर ना ठिकाना वे व्यभचारिन त्याग हुई स्त्री की भाति हैं जो घर - घर में बदनाम होती फिरती है । हे नानक ! जो गुरु के सन्मुख हो के बख्शे जाते हैं वे सतिगुर की संगति में मिल जाते हैं ।

जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ । जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जम छडि गइआ ।

अर्थः- जो मनुष्य सच्चे हरि को सेवते हैं, वे संसार समुंदर को पार कर लेते हैं जो मनुष्य हरि का नाम स्मरण करते हैं उन्हें जम छोड़ जाता है ।

से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ । हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुध मइआ । गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ । (3-645)

अर्थः- जिन्होंने हरि का नाम जपा है उन्हें दरगाह में आदर मिलता है पर हे हरि ! जिस पर तेरी मेहर होती है वही मनुष्य तेरी भक्ति करते हैं । सतिगुर के सन्मुख हो के भ्रम और डर दूर हो जाते हैं मेहर कर हे प्यारे ! मैं भी सदा तेरे गुण गाऊँ ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐेक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐेक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"